Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संतोषी माता व्रतीकथा ॥

॥ जय संतोषी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सात पुत्रों और छोटी बहू की कथा ॥

यह शुक्रवार व्रत में सुनाई जाने वाली लोककथा का मौलिक संक्षिप्त रूपांतरण है। परिवारों में इसके विवरण अलग मिलते हैं।

एक गाँव में एक वृद्धा अपने सात पुत्रों के साथ रहती थी। छह पुत्र कमाते थे, इसलिए वह उन्हें प्रेम से भोजन कराती थी। सातवाँ पुत्र काम न करता था; उसे भाइयों के खाने के बाद बचा हुआ भोजन मिलता था। वह माँ के व्यवहार को समझ नहीं पाता था।

एक दिन पत्नी के कहने पर उसने स्वयं यह भेदभाव देखा। मन दुःखी हुआ, पर झगड़ा करने के बजाय उसने काम खोजने के लिए दूर नगर जाने का निश्चय किया। चलते समय पत्नी को अपनी अंगूठी निशानी के रूप में देकर वह व्यापारी के यहाँ काम करने लगा।

उसके जाने के बाद घर में छोटी बहू का जीवन कठिन हो गया। उसे बहुत काम करना पड़ता और साधारण भोजन मिलता। एक दिन लकड़ी लाते हुए उसने कुछ स्त्रियों को संतोषी माता की पूजा करते देखा। उसने उनसे व्रत की रीति पूछी।

स्त्रियों ने शुक्रवार को माता की पूजा, गुड़ और चने का भोग, कथा-पाठ और खटाई से परहेज़ की प्रचलित रीति बताई। बहू ने अपनी सामर्थ्य भर गुड़-चना लिया और श्रद्धा से व्रत शुरू किया। वह धन से अधिक अपने पति की सकुशल वापसी चाहती थी।

॥ माता की कृपा और पति की वापसी ॥

लोककथा के अनुसार कुछ शुक्रवार बाद बहू को पति का पत्र मिला, फिर खर्च के लिए धन भी पहुँचा। नगर में पति व्यापार में आगे बढ़ गया था, लेकिन घर की स्थिति उसे ठीक से मालूम नहीं थी। कथा में माता स्वप्न में उसे पत्नी की याद दिलाती हैं।

व्यापारी से अपना हिसाब पूरा करके वह घर लौटा। छोटी बहू ने रास्ते में उसकी पहचान अपनी दी हुई अंगूठी से की। घर में फैली बातों के विपरीत उसने पत्नी की कठिनाई समझी और उसके साथ सम्मान से रहने लगा।

जब बहू ने व्रत पूरा करने का निश्चय किया, तो उसने उद्यापन का भोजन बनाया। खीर, पूड़ी और चने तैयार हुए। कथा के एक रूप में उसकी जेठानी ने बच्चों से खटाई माँगने को कहा। बहू ने खटाई नहीं परोसी, पर बच्चों को पैसे दे दिए; उन्होंने बाहर जाकर इमली खा ली।

कथा में इस घटना को उद्यापन की रीति में बाधा माना गया है। बहू फिर माता के पास गई, अपनी भूल स्वीकार की और दोबारा सावधानी से उद्यापन करने का संकल्प लिया। इस बार उसने बिना खटाई का भोजन कराया और बच्चों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार फल दिए।

HarGharPanditji.com
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ दर्शन और कथा का संदेश ॥

कथा आगे कहती है कि परिवार में सुख लौटा और बहू के घर एक पुत्र हुआ। एक दिन संतोषी माता साधारण, अपरिचित रूप में उसके द्वार पर पहुँचीं। परिवार उन्हें पहचान नहीं पाया, पर बहू ने श्रद्धा से स्वागत किया। परिवार ने अपने कठोर व्यवहार के लिए क्षमा माँगी।

इस लोककथा का भाव संतोष, धैर्य, परिवार में सम्मान और दूसरों के प्रति करुणा है। पूजा की सामग्री सुलभ बताई जाती है, जिससे कोई भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार श्रद्धा व्यक्त कर सके।

कथा में पत्र, धन, संतान या संकटों से मुक्ति जैसे चमत्कार आस्था के प्रसंग हैं; इन्हें जीवन के परिणाम की गारंटी न समझें। व्रत के साथ घर में न्यायपूर्ण व्यवहार और ज़रूरतमंद की मदद भी उतनी ही अर्थपूर्ण है।

॥ जय संतोषी माता ॥

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"